हेरिएट टबमैन

ध्रुव तारे की ओर बढ़ें

वायलेट फाइंडली

हैरियट टबमैन सिर्फ पांच फीट ऊंची थीं. वो पढ़-लिख नहीं सकती थीं, फिर भी उन्होंने सैकड़ों अफ्रीकी-अमेरिकियों की स्वतंत्र जीवन जीने में मदद की. इस अद्भुत महिला का जीवन वाकई में विलक्षण था.

हैरियट टबमैन का जन्म 1820 के आसपास मैरीलैंड में हुआ. उन दिनों दक्षिण में कुछ लोगों के पास गुलाम थे. हेरिएट भी एक गुलाम थी. उसके माता-पिता, भाई और बहनें सभी गुलाम थे.

गुलामों के मालिक गोरे लोग थे. गुलाम खाना बनाते, खेतों में काम करते, और जो कुछ भी उनके मालिक कहते वो काम करते थे. दासों को कोई वेतन नहीं मिलता था. उन्हें किसी भी समय उनके परिवार से दूर किसी और मालिक को बेचा जा सकता था.

जब हैरियट छोटी बच्ची थी तो उसके पास केवल एक पोशाक थी, और कोई जूते नहीं थे.

नन्हीं हैरियट और उसका परिवार एक गंदे फर्श वाले लॉग केबिन में रहते थे. उनका छोटा सा घर उनके मालिक के बड़े खेत की जमीन पर था.

हैरियट बहुत मजबूत थी.

हेरिएट कभी स्कूल नहीं गई. उसने बचपन से ही बड़ों की तरह काम किया. उसने गोरे परिवार के बच्चों की देखभाल की और उनके घर की सफाई की. उसके बाद वो खेत में काम करती थी, पानी ढोती थी और लकड़ी काटती थी.

एक दिन सुबह, एक गुलाम भाग गया. गोरे मालिक ने गुलाम को रोकने के लिए उस पर भारी वस्तु फेंकी. हैरियट रास्ते में थी इसलिए वो भारी चीज़ हेरिएट के सिर पर आकर लगी. फिर वो बुरी तरह घायल हुई और बहुत बीमार पड़ गई.
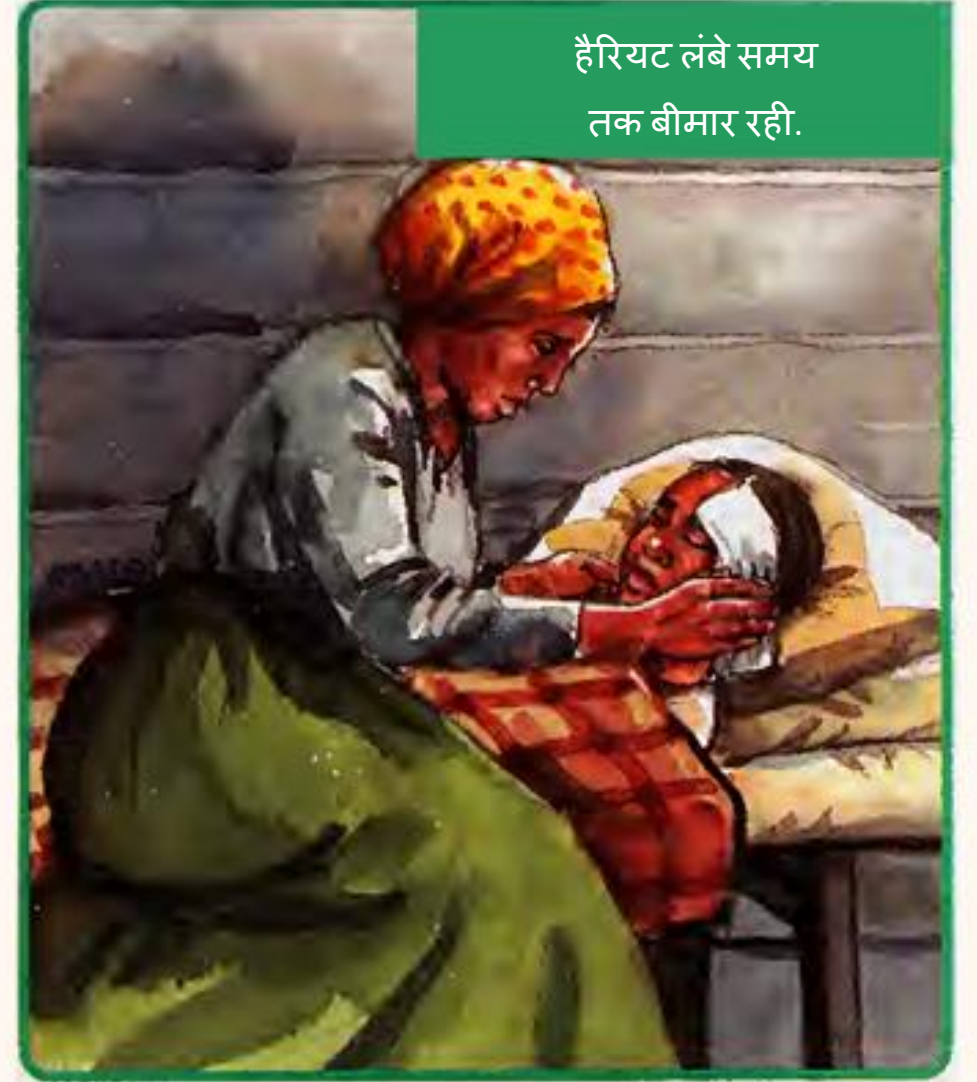
हैरियट लंबे समय तक बीमार रही.

हैरियट की माँ ने उसकी बहुत देखभाल की, लेकिन चोट हैरियट के सिर पर एक बड़ा निशान छोड़ गई. इस अनुभव के बाद ने हैरियट ने खुद भागने का फैसला लिया.

वो दिन 1849 में आया. शाम के समय आसमान में अंधेरा हुआ लेकिन किसी ने हेरिएट को जंगल में घुसते हुए नहीं देखा. वो उत्तरी राज्यों की ओर चल पड़ी, जहाँ कोई गुलामी नहीं थी.
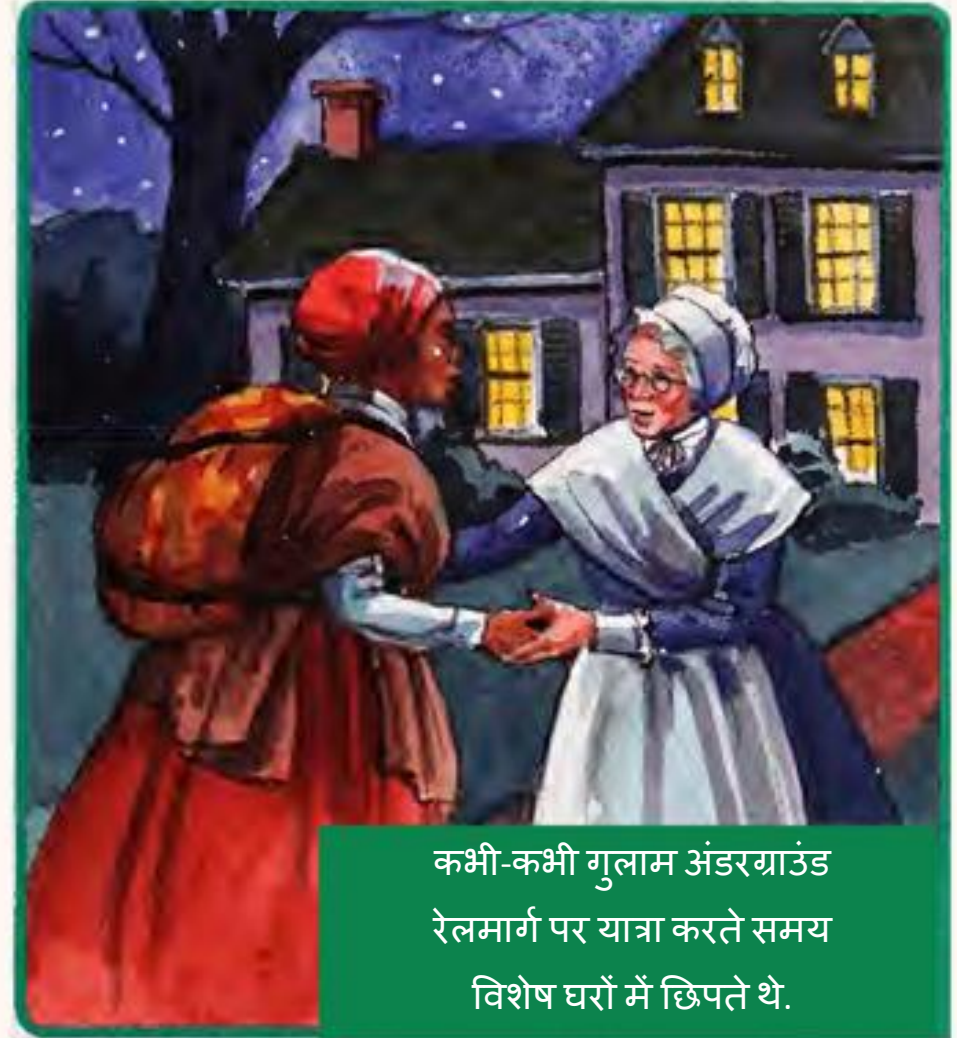
अंडरग्राउंड रेलमार्ग ने रास्ते में हेरिएट की मदद की. यह ट्रेनों की पटरी वाला रेलमार्ग नहीं था. यह एक ऐसा तरीका था जिससे गुलाम भागकर आज़ाद हो सकते थे, लोग चुपके से गुलामों को अपने घरों में छिपाते थे, उन्हें खाना खिलाते थे और उन्हें आगे का रास्ता बताते थे.

यह नक्शा हैरियट की
यात्रा दिखाता है.

हैरियट की यात्रा लंबी, ठंडी और खतरनाक थी. जंगल बहुत डरावने थे. लेकिन उस मार्ग से बहादुर हैरियट, फिलाडेल्फिया, पेनसिल्वेनिया पहुंची.

अंत में हैरियट उत्तर में पहुंच गई. अब वो आज़ाद थी! अब उसका कोई मालिक नहीं था. अब कोई उसे कोई आदेश नहीं दे सकता था.

हैरियट को एक होटल में नौकरी मिली. हैरियट ने जो भी पैसा कमाया, उसे उसने दूसरे गुलामों को भगाने में इस्तेमाल किया. अपने जीवनकाल में उसने दक्षिण की कई यात्राएँ कीं. इस प्रकार उसने 300 से अधिक गुलामों को आजादी दिलाई.

गुलामों के मालिकों ने हैरियट को पकड़ने के लिए बहुत बड़ा इनाम रखा, लेकिन वो होशियार महिला कभी पकड़ी नहीं गई. "मैं आठ साल तक अंडरग्राउंड रेलमार्ग पर एक कंडक्टर रही," उसने कहा, "और मैंने कभी एक भी यात्री नहीं खोया."

हेरिएट ने युद्ध में घायल हुए सैनिकों की देखभाल भी की.

हैरियट ने अन्य तरीकों से भी गुलामी से लड़ाई लड़ी. गृहयुद्ध के दौरान, उसने दक्षिण में जासूसी करके उत्तर की मदद की. उसने एक नर्स के रूप में भी काम किया.

1865 में, हैरियट का सबसे बड़ा सपना तब सच हुआ जब अंत में गुलामी समाप्त हुई. 93 वर्ष की आयु में हैरियट की मृत्यु हुई. लेकिन उसकी वीरता अभी भी ध्रुव तारे की तरह चमकती है.